अच्छा वक्त उसी का होता है जो किसी का बुरा नहीं सोचते।
– अज्ञात

यह तो फिर भी नया चुनाव है

वह भी ट्रंप परिवार में ही पली–बढ़ी हैं। डॉनल्ड ट्रंप को दुनिया का सबसे खतरनाक आदमी बताते हुए उन्होंने अपनी पुस्तक का शीर्षक रखा है 'टू मच एंड नेवर एनफ : हाउ माई फैमिली क्रिएटेड द वर्ल्ड्स मोस्ट डैंजरस मैन'।

नवीन वर्मा।

इसी साल नवंबर में होने वाले अमेरिकी राष्ट्रपति चुनाव जैसे–जैसे करीब आ रहे हैं, दोनों पक्षों की गहमागहमी बढ़ती जा रही है। ऐसे में दो पुस्तकों ने जिस तरह से सबका ध्यान अपनी तरफ खींच रखा है, वह काफी दिलचस्प है। इन दोनों किताबों का प्रकाशन रोकने की पूरी कोशिश राष्ट्रपति डॉनल्ड ट्रंप की ओर की गई लेकिन पहले पूर्व राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार जॉन बोल्टन की किताब ने अदालती लड़ाई जीती और फिर इसी सप्ताह ट्रंप की भतीजी मैरी ट्रंप की लिखी किताब का भी बाजार में आना तय हो गया। अमेरिकी राष्ट्रपति चुनावों में विवादों, घोटालों और रहस्योद्घाटनों की खासी भूमिका रहती आई है। शायद ही कोई चुनाव हो जिसमें तरह–तरह के सनसनीखेज खुलासे सामने न आते हों।

2016 के चुनावों को याद करें तो डॉनल्ड ट्रंप और हिलैरी क्लिंटन, दोनों को तरह–तरह के आरोप झेलने पड़े थे। खासकर ट्रंप के संकुचित विचारों और रंगीनमिजाजी को लेकर इतने रहस्योद्घाटन सामने आए कि उसके बाद भी कुछ बचा रह गया होगा, सोचना मुश्किल है। लेकिन राजनीति में हर दिन एक नया दिन होता है। यह तो फिर भी नया चुनाव है। जाहिर है, एक बार फिर लोगों को अपने वोट का इस्तेमाल करना है तो नए सिरे से उन्हें प्रत्याशियों की अच्छाई–बुराई समझाने का सिलसिला शुरू हो रहा है। इसी क्रम में इन दोनों पुस्तकों के प्रकाशित होने की बात आई तो राष्ट्रपति ट्रंप की इन पर रोक लगवाने की कोशिशों ने सबसे ज्यादा ध्यान खींचा। अमेरिकी राष्ट्रपति अगर कुछ छुपाना चाहते हैं तो यह लोगों की उत्सुकता जगाने वाला सबसे बड़ा कारक बन जाता है। लेखकों की पृष्ठभूमि इस पर और मसाला छिड़कने वाली है।

मैरी ट्रंप डॉनल्ड की भतीजी (उनके सौतेले भाई की बेटी) हैं। वह भी ट्रंप परिवार में ही पली–बढ़ी हैं। डॉनल्ड ट्रंप को दुनिया का सबसे खतरनाक आदमी बताते हुए उन्होंने अपनी पुस्तक का शीर्षक रखा है 'टू मच एंड नेवर एनफ रू हाउ माई फैमिली क्रिएटेड द वर्ल्ड्स मोस्ट डैंजरस मैन'।

खबरें बताती हैं कि इसमें अन्य बातों के अलावा यह भी कहा गया है कि कैसे डॉनल्ड के पिता और खुद डॉनल्ड ईमानदारी से टैक्स भरने को बेवकूफी मानते थे। जॉन बोल्टन ने भी ट्रंप को बतौर राष्ट्रपति करीब से देखा है। खबरों के मुताबिक उनकी पुस्तक 'द रूम व्हेयर इट हैपेंड' में बताया गया है कि कैसे राष्ट्रपति ट्रंप विदेशी राष्ट्राध्यक्षों से चुनाव जीतने में मदद मांगते रहे हैं। उन्होंने चीनी राष्ट्रपति शी चिन फिंग से चीन की आर्थिक ताकत का हवाला देते हुए कहा था कि वे उनकी (ट्रंप की) जीत सुनिश्चित कर सकते हैं। बहरहाल, इन पुस्तकों का मतदाताओं के दिलोदिमाग पर कितना और कैसा असर पड़ता है, यह साफ होने में वक्त लगेगा। फिलहाल यही कहा जा सकता है कि इलेक्ट्रॉनिक मीडिया और सोशल मीडिया के इस युग में अमेरिकी चुनाव किताबों के लिए एक बड़ा मोरेल बूस्टर हैं।

अनुकूल व्यवहार

अशोक वोहरा।

बेंक्यो सभी जीवित प्राणियों के एक दूसरे पर निर्भर रहने की बात पर जोर डालते हैं, साथ ही यह भी कि हमारी कार्यप्रणाली दूसरे सहचर और प्रकृति पर प्रभाव डालती है। बेंक्योने क्योसे को सह–अस्तित्व से विभेदित किया है। बेंक्यो के लिए, क्योसे का अर्थ दो या दो से अधिक व्यक्तियों का एक साथ इस तरह रहना है कि वह एक दूसरे के जीवन में प्रवेश कर सकें और एक का काम अन्य के लिए लाभदायक सिद्ध हो। उन्होंने व्याख्या की कि मृत्यु के पश्चात पवित्र भूमि में जन्म लेने की इच्छा समाज में उस स्थिति में आना है जो पवित्र भूमि के ही समान होगी। उन्होंने सुझाव दिया कि यदि कोई पर्याप्त नहीं है तो कोई कारण नहीं बनता कि हम उनके बीच अंतर करें और कुछ के प्रति अनुकूल व्यवहार करें और अन्य को विरोधी समझें।

संपादकीय

हाथी के दौड़ने का वक्त

आम तौर पर माना जाता है कि हाथी दौड़ नहीं सकते। लेकिन साइंस ने हाल में पता लगाया है कि हाथी 'ग्रूशो' ट्रिक का इस्तेमाल करते हैं और इसके जरिए वे 25 किलोमीटर प्रति घंटा की रफ्तार पकड़ लेते हैं। उनके पांव धरती से कभी भी एक साथ नहीं उठते, लेकिन वे ग्रूशो मार्क्स की चर्चित शैली में दौड़ लगा लेते हैं। बहरहाल, सवाल यह है कि क्या कोविड–19 महामारी हाथी के लिए इस बात का सटीक मौका है कि वह ड्रैगन से दो–दो हाथ कर ले? संकट आने पर भारत साहसिक निर्णय करता रहा है। सवाल यह है कि इतिहास के इस लंबे हिस्से में चीन ने हमसे युद्ध क्यों नहीं किए? एक तो हिमालय से हमें कुदरती तौर पर सुरक्षा मिली, दूसरे इसमें एक अहम भूमिका हमारी आर्थिक शक्ति की भी रही। यह महामारी ऐसा ही संकट है, जिसमें साहसिक और बदलाव लाने वाली सोच सामने आ सकती थी, लेकिन हम अब भी टुकड़ों में सोच रहे हैं। मेरा हमेशा से मानना रहा है कि भारत चिंतकों का देश है, लेकिन विचारों और योजनाओं पर अमल करने में हम बुरी तरह फिसल जाते हैं। हम सबको पहले से पता है कि भारत को क्या करना चाहिए। हमें ऐसे सलाहकारों की जरूरत नहीं है, जो हमें यही सब बताएं। हमें ऐसे लोगों की जरूरत है, जो इन पर अमल करें। समय आ गया है कि भारतीय हाथी भी कार्ल मार्क्स को छोड़कर ग्रूशो मार्क्स की शैली अपना ले। सचाई यह है कि जिन असल ड्रैगनों से हमें लड़ना है, वे हमारी सीमाओं के बाहर ही नहीं, इसके भीतर भी हैं।

चीन को झोंगुओ यानी मिडल किंगडम कहा जाता था। इस मिडल किंगडम वाले नजरिए से चीन और भारत का गठजोड़ मालिक और ताबेदार का होगा।

सुन जू की युद्धकला

अश्विन सांघी।

गलवान में भारत और चीन के बीच झड़प ने फिर याद दिलाया है कि हाथी और ड्रैगन का रिश्ता कितना जटिल है। समस्या यह है कि भारत इस रिश्ते के इतिहास को 1950 और उसके बाद के चश्मे से देखता है। 1950 में ही पीपल्स लिबरेशन आर्मी ने तिब्बत पर कब्जा किया था और फिर अक्साई चिन पर भी। वही साल था जब दोनों देशों के संबंध बिगड़ने शुरू हुए। फिर 1962 में दोनों ने एक जंग लड़ी। लेकिन चीन अपने विदेश संबंधों को कहीं ज्यादा पुराने और बड़े दायरे वाले प्रिज्म से देखता है। तीन हजार साल पहले चीन के झोऊ राजवंश का मानना था कि धरती के आधे हिस्से तक उसका कब्जा हो चुका है। लिहाजा चीन को झोंगुओ यानी मिडल किंगडम कहा जाता था। इस मिडल किंगडम वाले नजरिए से चीन और भारत का गठजोड़ मालिक और ताबेदार का होगा।

चीन की विदेश नीति और सैन्य कदम केवल इस मिडल किंगडम वाले नजरिए पर आधारित नहीं हैं। उन पर सुन जू की युद्ध कला का भी असर है। सुन जू कहता है, हर युद्ध कला का आधार है छल। यानी जब हम ताकतवर हों तो कमजोर जैसे दिखें। सक्रिय हों तो निष्क्रिय लगें। पास हों तो लगना चाहिए कि हम दूर हैं

और दूर हों तो दुश्मन को लगना चाहिए कि हम नजदीक हैं। चीन न तो अपना इतिहास भूला है, न ही प्राचीन ज्ञान। अफसोस कि भारत भुला बैठा है। अगर चीन सुन जू से प्रेरित हो सकता है तो भारत के पास भी कौटिल्य हैं। उनका सामरिक और आर्थिक नजरिया कहीं से कमजोर नहीं है।

कौटिल्य कहते हैं, सेना का सहारा लिए बिना मकसद पूरा हो सकता हो तो सशस्त्र संघर्ष नहीं करना चाहिए। भले ही मकसद हासिल करने के लिए साजिश, कपट और धोखे का सहारा लेना पड़े। दुश्मनी पर उतारू दुश्मन की तरक्की को नुकसान पहुंचाने वाले कदम को भी प्रगति माना जाएगा। लेकिन कौटिल्य के अर्थशास्त्र में सबसे अहम बात यह कही गई है कि समृद्ध ही विजयी होता है। हमने इस बुनियादी सच पर ध्यान क्यों नहीं दिया? भारत का चश्मा बदलने की जरूरत है। चीन से भारत का संबंध सदियों पुराना है। कलारिपयट्टु और सिलंबम जैसी दक्षिण भारतीय युद्ध कलाएं पल्लव राजकुमार बोधिधर्म के जरिए शाओलिन पहुंची थीं। इस तरह वह नई टेक्नीक सामने आई, जिसे आज हम कुंग फू के नाम से जानते हैं। इसी तरह बौद्ध धर्म भारत से लुओयांग के वॉइट हॉर्स टेंपल पहुंचा और फिर वहां से न केवल चीन बल्कि बाकी दुनिया में भी इसका प्रसार हुआ।

चाणक्य के अर्थशास्त्र में चीन के रेशम का भी जिक्र आया है, जिसका भारत में आयात होता था। उसकी कीमत काफी ज्यादा होती थी। भारत आया ह्वेनसांग विश्व प्रसिद्ध नालंदा विश्वविद्यालय पहुंचकर रोमांचित हो उठा था तो यहां के गुड़ के स्वाद का भी वह दीवाना था। ऐसा गुड़ उसने कभी नहीं खाया था। ब्रिटेन के लोगों के जरिए चीन से चाय हम तक पहुंची।

2010 के डॉलर मूल्य के आधार पर 1960 में चीन का जीडीपी 128.3 अरब डॉलर था। उस साल भारत का जीडीपी था 148.8 अरब डॉलर। लेकिन 1978 में चीन भारत से आगे निकल गया। उसका जीडीपी 293.6 अरब डॉलर हो गया, जबकि भारत का आंकड़ा 293.2 अरब डॉलर रह गया। उसके बाद चीन और भारत का अंतर बढ़ता गया। 2019 में चीन का जीडीपी भारत का 4.78 गुना हो गया।

सूडोकु नवताल- 5369

मध्यम

9		2		4	1	7		
1						6		
5	7	3	2				4	
				9	4	8		
4		7				9		6
		5	8	3				
	3				6	5	9	1
		6						7
		9	1	8		2		4

Jagrutidaur.com, Bangalore

- प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक हैं.
- प्रत्येक आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 3×3 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें.
- पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते .
- पहेली का केवल एक ही हल है.

सूडोकु नवताल -5368 का हल

5	4	9	1	8	3	2	6	7
1	2	6	4	9	7	3	5	8
3	8	7	5	2	6	1	4	9
8	7	1	3	4	2	6	9	5
9	5	3	6	1	8	7	2	4
2	6	4	7	5	9	8	1	3
4	3	5	2	7	1	9	8	6
6	9	2	8	3	4	5	7	1
7	1	8	9	6	5	4	3	2

अपना ब्लॉग

आर्थिक असंतुलन हमारे लिए भारी पड़ेगा

मोहन। भारत में एक के बाद एक सभी सरकारें यह मानती रहीं कि वे सैन्य या कूटनीतिक तरीकों से चीनी आक्रामकता का मुकाबला कर सकती हैं। उन्होंने यह बात बिल्कुल नजरअंदाज कर दी कि आर्थिक असंतुलन हमारे लिए भारी पड़ेगा। नौकरशाही का शिकंजा काट दें, टैक्स नियमों को आसान बनाएं। शिक्षा और स्वास्थ्य से जुड़ी दिक्कतें दूर करने के लिए कुछ नए तरीके तलाशें। मुकदमों का जल्दी निपटारा हो। पुलिस मशीनरी को आधुनिक कलेवर दिया जाए। खेती–बाड़ी के बारे में हाल में जिन सुधारों का ऐलान किया गया था, उन्हें तेजी से लागू करें। लॉकडाउन की वजह से ज्यादातर थेरपी सेंटर्स, पार्क और दूसरे मनोरंजन स्थल बंद हैं। इससे भी इन विशेष बच्चों की दैनिक गतिविधियों में व्यवधान देखा गया है। वे सामाजिक संपर्कों से कट कर लंबे समय से एक ही स्थान पर सिमटे हुए हैं। इससे उनके मौजूदा विकारों में वृद्धि की आशंका है, खासकर एडीएचडी ग्रसित बच्चों में इसका प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है। शहरों में इंफ्रास्ट्रक्चर बेहतर करें। उन तमाम कायदा–कानूनों को हटाएं जो उद्यमिता की राह रोकते हैं।